THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

अपना जीवन बिताना ? कैसे ?

Get on with my life? How?

The Christian Science Monitor

जब ऐसे किसी की मृत्यु हो जाती है जिसे तुम प्यार करते हो, शोक तथा अनिश्चितता को इतना अधिक महसूस करना आसान है कि अत्याधिक प्यार भरे शब्द भी दुःख को पार न कर पाएं परन्तु सच्चे प्रोत्साहन के पीछे सचमुच ही प्रेम होता है और यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि उन प्यार भरे शब्दों के पीछे सान्तवना देने तथा उपचार करने का **परमेश्वर** – आधारित उद्देश्य होता है।

मुसलिम **परमेश्वर** को "सर्व – करूणामयी" की तरह संबोधित करते हैं तथा जॉरडन में दोस्तों ने मुझे यह याद दिलाया जब सीरिया की सीमा के निकट एक छोटे विश्वविद्यालय – शहर में रहते हुए, मुझे पता चला कि मेरी माँ की अकस्मात मृत्यु हो गई थी।

उनके शब्दों ने मुझे याद दिलाया, जैसे इस अखबार की संस्थापिका तथा Science & Health with Key to the Scriptures की लेखिका मेरी बेकर एडी, ने **परमेश्वर** का वर्णन हमारे **पिता – माता** की तरह किया था।

इस विचार पर चिंतन करते हुए मैं उन सब मातृत्व की विशेषताओं के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित हुआ जो मैं **परमेश्वर** के साथ जोड़ता हूँ जैसे कि कोमलता, सान्तवना और पालन – पोषण। इन विशेषताओं की मृत्यु नहीं हो सकती न ही वे ज़रूरत के समय हम से लुप्त हो सकती हैं। इनका स्त्रोत्र **दिव्य** है जो सदा उपस्थित रहता है तथा सदा उपलब्ध होता है। उस पल मैंनें सान्तवना महसूस की।

मुझे यह देखने की जरुरत थी कि मम्मी लुप्त नही हुई थी, यह कि मैं एक पतवार के बिना नहीं छोड़ दिया गया था। मुझे बहुत सा काम भी करना था – विश्वविद्यालय की अपनी कक्षाओं को स्थगित करना था, जॉरडन के आप्रवासन से अपनी पत्नी तथा अपने दोनों के प्रस्थान वीज़ा का प्रबन्ध करना था, उड़ान आरक्षित करवानी थी तथा उस शाम एक उड़ान के लिए टिकटें खरीदनी थी, और अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे तक पहुँचना था जो कि बस के द्वारा काफी घण्टों का रास्ता था ।

मैं छोटे मोटे काम करने के लिए भाग दौड़ कर रहा था जब मैंने उस नीले मध्य पूर्वीय आसमान की तरफ ऊपर देखा और मुझे कुछ याद आया जो कि श्रीमति एडी ने लिखा था – एक वाक्य जो मेरी माँ के मनपसँद में से भी एक था। यह कहता है, "सही रास्ता, रास्ते का अधिकार जीत लेता है, निस्संदेह **सत्य*** तथा **प्रेम** का रास्ता जिसके द्वारा सारे उधार चुका दिए जाते है, मानवजाति को आशीषित किया जाता है तथा **परमेश्वर** को गौरान्वित किया जाता है" ("The First Church of Christ, Scientist, and Miscellany" पृष्ठ 232)

मैंने उन शब्दों को कहते हुए मेरी माँ की आवाज़ सुनी। मेरा मतलब यह नहीं है कि मेरा मृतकों के साथ किसी तरह का वार्तालाप था – भगवान बचाए। परन्तु मुझे उस वाक्य का उदाहरण देते हुए उनकी याद आई। मुझे दाता में उनका स्थिर यकीन याद आया और कितनी ही बार उनके **परमेश्वर** ने उन्हें नीचा नही दिखाया था मैं जानता था कि **परमेश्वर** मुझे भी नीचा नहीं दिखाएगा और **उसने** नहीं दिखाया।

एक घंटे मे सारी व्यवस्थाएं हो गई। हवाई अड्डे के साथ संयोजनों तथा आप्रवासन से गुजरना आसान तथा तनाव – मुक्त था। कई महाद्वीपों पार घर की ओर विमान – उड़ान लम्बी थी परन्तु दुर्गम नहीं; हम इस वक्त में अपने पापा की मदद कर पाए और सारा समय हमारे पास **परमेश्वर** की करुणामयी देखभाल की बहुमूल्य चेतना थी।

मैंनें जॉरडन के आसमान के नीचे उस पल यह भी महसूस किया कि मेरी माँ उसी तरह आगे बढ़ रही है, जैसे वह सदा से थी, **परमेश्वर** के एक सम्पूर्ण तथा प्रिय विचार की तरह। मैं जानता था कि एक विचार की कभी मृत्यु नहीं हो सकती। मैं जानता था कि उन की पहचान लुप्त नहीं हुई थी मैंने उस दिन दिव्य **पिता – माता** की सान्तवना को महसूस किया तथा उस सान्तवना ने मृत्युशोक की उदासी तथा एकाकीपन का उपचार कर दिया।

सान्तवना ने घर में परिवार के एकत्रित होने पर प्रसन्नता को जगह दी और वापसी की उड़ान पर मेरे साथ रही। उस के बाद आने वाले वर्षों में मैं निश्चित रुप से मानता हूँ कि मैं मम्मी की कमी महसूस करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि मैं उनके साथ बोल सकता तथा हँस सकता।

परन्तु वह शोक नहीं है। मैं जानता हूँ कि वह आगे बढ़ रही हैं, खुशी से **परमेश्वर** की प्रसन्नता, बुद्धिमता, सक्रियता, तथा जिंदादिली की विशेषताओं को अभिव्यक्त करते हुए। मैं जानता हूँ कि वह **मन** को अभिव्यक्त कर रही हैं जो कि **परमेश्वर** है, किसी प्रकार की लाभप्रद तथा फलदायक विद्यमानता में आगे बढ़ते हुए। मैं जानता हूँ कि वह अब भी **जीवन** में आनन्दित हो रही हैं जो कि **परमेश्वर** है और जो उन से कभी भी छीना नहीं जा सकता।

Science and Health विवरण देती है "मृत्यु के स्वप्न पर **मन** के द्वारा यहाँ या यहाँ के बाद विजय प्राप्त करनी होगी। सोच अपनी स्वयं की भौतिक उद्घोषणा से जाग जाएगी, 'मैं मृत हूँ,' **सत्य** के इस घोषित शब्द को पकड़ने के लिए, 'न कोई मृत्यु, निष्क्रियता, रोगी क्रिया, अधिक – क्रिया, न ही प्रतिक्रिया होती है'" (पृष्ठ 427 - 428)

यह मुझे आश्वासन देता है कि हमारे प्रियजन आगे बढ़ रहें हैं। यह मुझे जानकारी देता हैं कि **परमेश्वर** की मातृत्व विद्यमानता मेरे साथ भी है, मुझे आगे का रास्ता दिखाते हुए। यह केवल "मेरे जीवन को बिताना " नहीं है अपितु **परमेश्वर** के साथ सही जीवन बिताना है, जो कि स्वंय **जीवन** है।

** जो शब्द उभार कर लिखे हैं, वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।*

For this translation in English and other translations in Hindi, please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.